मनोज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 10 मूल्य 16.00
ड्राक्युला
का
प्रेतजाल
OCEAN 11
fenzz
इस
कामिक्स
विशेषांक के साथ
मैग्नेट स्टीकर
मुफ्त
KADAM STUDIO
राम-रहीम

ड्राक्युला का प्रेतजाल

कथानक : नाज़रा खान • चित्रांकन : दिलीप कदम, उमाकांत कानडे •

वक्त कभी नहीं ठहरता, न धरती पर...
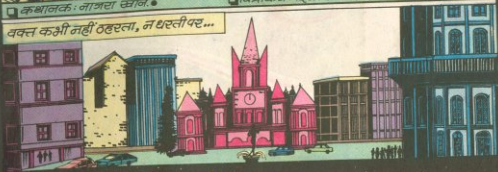
... और न अन्तरिक्ष में।

गामा किरणें छोड़कर इसे अपने यान में खींच लो।

अगले ही पल दबा एक बटन...

...और यान से निकली गामा किरणें।
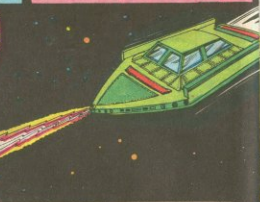
गामा किरणों से बंधा वह विचित्र गोला फौरन यान की ओर खिंचने लगा –

किरणों का घेरा हटते ही सभी की आंखों में नजर आने लगा आश्चर्य –
अरे! ये तो कोई पृथ्वीवासी लगता है।
इसके सीने में गड़े विचित्र हथियार को निकालो।
सेनापति के आदेश पर एक ने आगे बढ़कर त्रिशूल को ड्राक्युला के सीने से बाहर खींच लिया…
…और दावत दे डाली तबाही को.
कड़ कड़ाक
आह!
होश में आते ही अपने पैरों पर खड़ा हो गया ड्राक्युला –
अगले पल उसका ठहाका पूरे वातावरण में गूंजता चला गया –
हा…हा…हा…! ड्राक्युला आजाद हो गया। हा…हा…हा…!
!!!
???
• ड्राक्युला के बारे में जानने के लिए पढ़ें: राम-रहीम और ड्राक्युला सीरीज के अन्य कॉमिक्स।
• ड्राक्युला बालक • भूतमहल • ड्राक्युला की वापसी
• ड्राक्युला दिल्ली में • फिर आया ड्राक्युला.

तभी अपने आस-पास खड़े ग्रहवासियों को देख वह बुरी तरह चौंक उठा–

विचित्र प्राणी! इसका मतलब इस समय मैं किसी अन्य ग्रह पर हूं।

कोई बात नहीं, खून तो इनमें भी होगा।

अगले क्षण मौत ब
कर झपटा था ड्राक्युला–

और --

कचर कचर

हा...हा...हा! मीठा-मीठा खून व मांस।

देखने वालों के चेहरे पर दहशत तांडव करने लगी–

उफ! ये तो कोई शैतान लगता है।

रोको इसे! वरना ये हम सबको मार डालेगा।

आहा!
खून-मां

अगले पल उन सबके हाथों में लेजर गनें नजर आने लगीं–

फायर!

शूं शूं

मौत तेजी से ड्राक्युला की ओर बढ़ी..

लेकिन...

...बीच में ही नष्ट हो गयी।
बड़ाम
बड़ाम

आश्चर्यचकित थे सभी–
जब तक पिशाच मणि ड्राक्युला के पास है, कोई उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता।
ओह!

सका यह भयंकर रूप देख–
भागो! वरना यह हमें मार डालेगा!
भागो!
भागो!

उन्हें भागता देख–
किसी को नहीं भागने दूंगा मैं! तुम सबके खून और मांस की जरूरत है मुझे!

गले पल वह लाशों का ढेर
गाने लगा...
भच्च
फच्चाक

...जिन्हें भूखे कुत्ते की तरह नोच रहा था ड्राक्युला।
आहा! गमागर्म खून!
उफ! इस शैतान से निपटने के लिए मुझे डैथस्कवैयड को बुलाना होगा!

तुरन्त ही—
कालिंग डैथस्कवैयड...

फौरन कण्ट्रोल रूम में पहुंचो!
!!!

आदेश मिलते ही डैथस्कवैयड के चारों जांबाज सदस्य फायरा, बिल्लौटी, हथौड़ा और शैतानू
वहां से ट्रांसमिट हुए...

...और जा पहुंचे ड्राक्युला के सामने—
डैथस्कवैयड आ पहुंची है, अब खैर नहीं इसकी।
हमसे नहीं बचेगा तू दुष्ट शैतान!
हथौड़ा के हथौड़े का एक ही वार तुझे अन्तरिक्ष में पहुंचाने के लिए काफी होगा।
मेरे फायर हैन्ड मौत देंगे तुझे।
बिल्लौटी फाड़कर रख देगा तुझे।

लेकिन उन्हें देख भयभीत
के स्थान पर ड्राक्युला की
चमक उठीं—
अद्भुत शक्ति
हैं ये चारों। इन्हें
ड्राक्युला का दा
होना चाहिए।

और इससे पहले कि वह चारों कुछ कर पाते —

ड्राक्युला के हाथ में थमी मणि से निकली किरणें टकराईं, शैतानू, फायरा, बिल्लौटी और हथौड़ा से —

बेवकूफो, तुम मुझे क्या मारोगे। तुम सब तो मेरे दास बनोगे।

अगले पल उनके शरीरों में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगा —

देखते ही देखते चारों भयंकर पिशाचों में बदल चुके थे —

हा.हा.हा! अन्तरिक्ष की चार सबसे शक्तिशाली शक्तियां मेरी दास! हा... हा... हा...!

महान ड्राक्युला!

जिन्दाबाद!

हमारे लिए क्या आज्ञा है महान स्वामी?

हम पृथ्वी पर जाना चाहते हैं। हमारा वहां जाने का इंतजाम करो।

पृथ्वी!

आप हमारे साथ आइये स्वामी।

कुछ क्षण बाद प्रयोगशाला की छत पर —

ये सुपर सोनिक यान हमें कुछ ही देर में पृथ्वी पर पहुंचा देगा स्वामी !

ठीक है।तुम नियंत्रण करोगे इस यान को !

जैसी आपकी आज्ञा।

सबके यान में सवार होते ही—

जूम्मsss

पिशाच मणि की सहायता से इस बार मैं पूरा विश्व फतह करके रहूंगा।और इस नेक काम की शुरुआत...

...मैं अपने दुश्मनों राम-रहीम और भूत-नाथ के कत्ल से शुरु करूंगा।

सबसे पहले मेरा शिकार राम-रहीम बनेंगे, जिन्होंने मुझे दो बार शिकस्त दी है। उसके बाद भूत-नाथ को देखूंगा।

यह जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स,

ड्राक्युला बालक, भूतमहल, ड्राक्युला की वापसी, ड्राक्युला दिल्ली में और फिर आया ड्राक्युला

तुरन्त ही हुक्म दागा ड्राक्युला ने—

मुबारक हो मि. राम-रहीम आप दोनों को...

हम वचन देते हैं, आज के बाद विश्व पर मंडराने वाले हर खतरे से निपटने में हम भी आपके साथ होंगे। चाहे इस प्रयास में हमारी जान ही क्यों न चली जाए।

हमें आप लोगों से यही उम्मीद थी।

कुछ देर बाद एयर पोर्ट पर –
आप सबने हमें जो प्यार दिया है, हम उसे कभी नहीं भुला सकेंगे।
अगर आज हमें भारत से अर्जेन्ट काल न आती तो हम कुछ दिन और आपके साथ रुकते।

हमें आज्ञा दीजिए। भगवान ने चाहा तो फिर मिलेंगे।
अमेरिका में हमेशा तुम दोनों का स्वागत है मित्रो।

बाकी यात्री यह दृश्य देख आश्चर्यचकित थे–
कौन हैं यह हिन्दुस्तानी लड़के, जिन्हें विदा करने सुपरमैन, स्पाईडरमैन और बैटमैन जैसी हस्तियां खुद आई हैं।
अरे! तुम इन्हें नहीं जानते। यह दोनों हिन्दुस्तान के सबसे ताकतवर सुपरहीरो राम-रहीम हैं।

तुम इन्हें कैसे जानते हो?
मेरा भाई हिन्दुस्तान में एक कम्पनी में ऑफिसर है, वह मुझे इनके कारनामों पर छपी कॉमिक्स भेजता है।

इन दोनों ने तो हमारे सुपर हीरोज से भी तगड़े कारनामे अंजाम दे रखे हैं।
अच्छा!

उधर राम-रहीम सिक्योरिटी चैक की तरफ बढ़ चुके थे।
कुछ ही देर बाद –
जूम्म्म 555

बेहद जाबाज़ हैं दोनों।
वाकई! इनके हमारी टीम में शामिल होने से हमारी ताकत दुगुनी हो गई है।
उधर ड्राक्युला का विमान अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन के व्यस्त इलाके में उतरने जा रहा था।
यान को यहीं कहीं उतार लो शैतान!
जी स्वामी!
यान को नीचे उतरते देख नीचे मौजूद लोगों में हलचल मच गई —
???
वह क्या है?
हे भगवान! कहीं हम पर कोई मुसीबत तो नहीं टूटने जा रही है।
लोगों का सोचना सही था...
... सचमुच मुसीबत ही तो थे यान से बाहर निकलने वाले —
टूट पड़ो सब पर, कोई जिन्दा बचकर नहीं जाना चाहिए...
???
...और तब तक मौत बरसाते रहो, जब तक कि सरकार राम-रहीम को खुद मेरे हवाले नहीं कर देती।
तुरन्त ही ड्राक्युला और उसके दास कहर बनकर टूटने लगे लोगों पर —
आई...ई...ई...
ई... ई...ई

चारों तरफ बरसने लगी थी..... तबाही...
... प्रलय...
... और मौत...
आऽऽऽ
धड़ाक
आई... ई... ई...
ई... ई... ई...
हैल्प! हैल्प!!
एक ही चेतावनी दोहराई जा रही थी बार-बार—
अगर राम रहीम को मेरे हवाले नहीं किया गया तो श्मशान बना दूंगा मैं पूरे अमेरिका को...
दूसरी ओर एयरपोर्ट से बाहर निकलते हुए अचानक सुपरमैन चौंक पड़ा—
उफ!
क्या हुआ सुपरमैन?
सुपरमैन ने उसे सारी बात बताई...

... और बोला —
हमें फौरन कुछ करना होगा!
तुम ठीक कहते हो।
कुछ क्षण बाद तीनों घटना स्थल की ओर उड़े जा रहे थे —
इधर पूरे जोरों पर थी ड्राक्युला की तबाही —
खत्म कर दो इन्हें! जब तक राम-रहीम नहीं मिल जाते, यह तबाही जारी रहनी चाहिए।
...आगे बढ़ो!
मौत के दूत बनकर आगे बढ़े फायरा, हथौड़ा, शैतान और बिल्लौटी —
ठीक तभी —
बस, बहुत हो चुका शैतानों!
ओह!
!!!
आहा! सुपरमैन, बैटमैन और स्पाईडर मैन! अब नहीं बचेंगे ये शैतान!
राम-रहीम तो वापस इंडिया जा चुके हैं, इसलिए वह तो नहीं मिल पायेंगे लेकिन मौत जरूर मिलेगी तुम्हें
सुपरमैन किल हिम!

तभी ड्राक्युला आ खड़ा हुआ तीनों के सामने—
बहुत नाम सुना है मैंने तुम्हारा! आज देखता हूं, कितने शक्तिशाली हो तुम तीनों!
हमारी शक्ति से बच नहीं पायेगा तू!
स्पाईडरमैन ने फौरन कर दिया वार...
...लेकिन दूसरे ही क्षण हैरान रह जाना पड़ा उसे—
तेरे इन जालों को तो बड़ी आसानी से जला सकता हूं मैं!
ओह!
तभी सक्रिय हो उठा सुपरमैन—
लेकिन मेरी सुपर शक्ति का क्या करेगा प्यारे!
इसका इलाज भी है मेरे पास!
ओह!
हा..हा..हा..! देखा मेरा कमाल! तुम दोनों बच्चे हो मेरे सामने!

तभी एक प्रचण्ड घूंसे ने पैर उखाड़ दिये ड्राक्युला के।
ओह!
धड़ाक
लहराकर दूर जा गिरा वह —
बैटमैन के इस घूंसे का क्या जवाब है तेरे पास!
ओह!
जबड़े के साथ-साथ एक पल के लिए दिमाग भी हिल गया था ड्राक्युला का-
उसी पल टूट पड़ा स्पाईडरमैन उसके गुलामों पर...
और उसके जालों में कैद होकर रह गये चारों।
लेकिन अगले ही पल -
इन कच्चे धागों की कोई अहमियत नहीं है हमारे सामने।
फिर वहां एक जबरदस्त टकराव छिड़ गया -

मौके की नजाकत को बहुत जल्दी समझ गया था ड्राक्युला —

इन तीनों से टकराकर अपने शक्तिशाली गुलामों को खो दूंगा मैं। इनसे टकराने से अच्छा है मुझे अपने लक्ष्य के पीछे भागना चाहिए!

दूसरे ही क्षण ड्राक्युला के हाथ में थमी पिशाचमणि से निकली सर्द किरणें...

... जो तीनों सुपर हीरोज को अपनी चपेट में लेती चली गईं —

ओफ! एकदम फ्रीज हो गया हूं मैं!

मेरे भी हाथ-पांव नहीं हिल पा रहे हैं।

इसी पल का भरपूर फायदा उठाया था ड्राक्युला ने

आओ!

ओफ! वे भाग रहे हैं और हम उन्हें रोक भी नहीं सकते।

सचमुच बहुत विवश हो गये हैं हम!

आज तो जा रहा हूं सुपरमैन, लेकिन एक दिन तुमसे टकराने फिर आऊंगा मैं...

... और वह दिन तुम तीनों की जिंदगी का आखिरी दिन होगा!

उफ!
चला गया।
उसी हालत में चीख पड़ा सुपरमैन–
सार्जेंट, फौरन इंडिया मैसेज भेज दो। ड्राक्युला नामक तबाही उनके देश की तरफ बढ़ रही है।
!!!
सूचना तुरन्त भारत पहुंची–
WHAT?
यह सच है, ड्राक्युला अपने देश के सुपर हीरोज़ राम-रहीम की खोज में भारत के लिए रवाना हो चुका है।
उसे रोकिये मिस्टर मुखर्जी, वरना वह आपके देश में तबाही मचा देगा।
ओह!
इसके साथ दूसरी ओर से संबंध विच्छेद हो गया।
राम-रहीम अभी-अभी अमेरिका से वापस लौटे हैं, उन्हें इसकी खबर देनी चाहिए।

कुछ देर बाद चीफ मुखर्जी के सामने बैठे डॉ. भूतनाथ, राम-रहीम को ड्राक्युला की वापसी और उसके अंतरिक्ष में जाने की घटना सुना रहे थे—
...इस तरह पिशाच मणि की मदद से ड्राक्युला मुझ से बचकर अंतरिक्ष में भाग गया...
...लेकिन यह समझ में नहीं आया कि ड्राक्युला अन्तरिक्ष से वापस कैसे लौट आया।
क्या अब उसे रोकने का कोई रास्ता नहीं है, भूतनाथ अंकल?
नहीं! पिशाच मणि के रहते वह अमर है। उसे कोई नहीं मार सकता।
ओह! यानी उसे मारना नामुमकिन है?
ऐसा ही समझो।
कुछ भी हो मि. भूतनाथ, हमें उसका मुकाबला करना ही पड़ेगा...
...अब तक मिली रिपोर्ट के अनुसार, ड्राक्युला किसी अंतरिक्ष विमान में सवार होकर भारत की ओर आ रहा है...

...इसलिए उसे रोकने के लिए मैंने वायु सेना को सतर्क रहने के आदेश दे दिये हैं...
...जैसे ही उसका यान नज़र आयेगा वे सब मौत बनकर टूट पड़ेंगे उस पर।
इस बार शायद ही खत्म कर पायें हम ड्राक्युला को।
...दर ड्राक्युला को रोकने निकले घातक लड़ाकू विमानों...
... के पायलट अचानक चौंक उठे —
एक विचित्र यान सीमा की तरफ बढ़ रहा है। सावधान!
FENZZ

ड्राक्युला की नजर भी अपनी ओर बढ़ती मुसीबत पर पड़ चुकी थी—
खतरा!
आप चिंता मत कीजिए स्वामी, इस खतरे को चुटकियों में दूर करता हूं मैं।
शैतानू की उंगलियां नाच उठीं की-बोर्ड पर—
अगले पल—
वह हम पर हमला कर रहे हैं।
शियूं sss
शियूं sss
बड़ाम बड़ाम
फायर!
दूसरे ही क्षण लड़ाकू विमान भी आग उगलने लगे...
बुम बुम
...और आकाश में छिड़ गया एक अच्छा-खासा युद्ध—
उफ! जाने किस धातु का बना है वह यान? हमारी शक्तिशाली मिसाइल्स का भी उस पर कोई असर नहीं हो रहा!
बड़ाम बड़ाम
शीयूं
शीयूं
फिर इस युद्ध को शैतानू ने ज्यादा देर तक नहीं चलने दिया—
आह!
बड़ाम
बड़ाम
आsss
शीयूं
आई... ई...ई...!
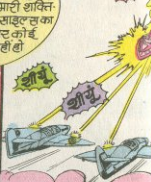
सब खत्म ही चुके हैं महान ड्राक्युला। अब हमारे लिए क्या आदेश है?
तुम्हारा यान तो बहुत चमत्कारी है शैतान, यह तो किसी भी शहर का पलभर में नाश कर सकता है।
मैं समझ गया स्वामी क्या कहना चाहते हैं आप।
बिल्कुल ऐसा ही होगा।
कुछ क्षण बाद तेज नगर के शहर पर मौत मंडरा रही थी -
सर्र... सर्र... सर्र...
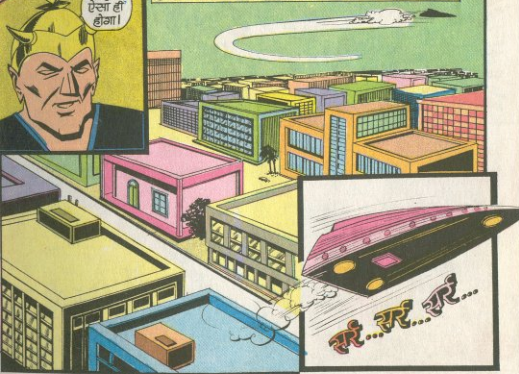
अगले पल दबा एक बटन...
...और बरसने लगी मौत..
...तेज नगर और उसके नागरिकों पर...
बड़ाम
आई... ई... ई...
आऽऽऽ
ई... ई... ई
भड़ाम
ई... ई... ई...
बचाओ ऽऽऽ
भड़ाम
आऽऽऽ
देखते-ही-देखते पूरा शहर श्मशान में बदल चुका था—
अब!
अब यान को इस शहर के टी.वी.स्टेशन ले चलो। पूरे भारत-वासियों को मेरे आने की सूचना मिल जानी चाहिए।
आई... ई... ई...
हाय...!
बचाओऽऽऽ

कुछ ही पलों बाद पूरा भारत आंखें फाड़े टी.वी. स्क्रीन की तरफ देख रहा था -
ड्राक्युला!
हे भगवान! ड्राक्युला!
मुझे उम्मीद है आप लोग मुझे भूले नहीं होंगे। इस नाचीज का नाम ड्राक्युला है। मैं एक बार फिर पूरे विश्व को मिटाने के लिए वापस आया हूं।
लेकिन विश्व को मिटाने से पहले मैं अपने दुश्मन राम-रहीम का खून पीना चाहता हूं।
वाहे गुरु! ये शैतान किथों वापस आ गया।
सच्चे पातशाह! अपने बंदों की रक्षा कर।
हो सकता है उनका खून पीने के बाद मुझे सुकून मिल जाए और मैं अपने मिशन को त्याग दूं...
...अब अगर तुम लोग अपनी जान बचाना चाहते हो तो राम-रहीम को मेरे हवाले कर दो...
...जब तक राम-रहीम मेरे सामने नहीं आयेंगे, तब तक मैं तबाही मचाता रहूंगा।

भड़ाक
ओह!
उफ!
उफ। लगता है इस बार ड्राक्युला पूरे विश्व को खत्म करके छोड़ेगा।
नहीं, ऐसा नहीं होगा। ड्राक्युला को रोकना होगा।
कौन रोकेगा उसे?
हम!
कैसे?
अपने प्राणों की आहुति देकर!
तड़प कर रह गये चीफ मुखर्जी उन दीवानों की बात सुनकर—
नहीं! तुम ऐसा नहीं कर सकते।
यदि मानव जाति को ड्राक्युला के कहर से बचाना है तो ऐसा करना ही होगा चीफ अंकल!
अगर हमारे बलिदान से अरबों लोगों का जीवन बच सकता है, तो हम खुशी से अपना बलिदान देने को तैयार हैं।

नहीं मेरे बच्चों, नहीं। तुम ऐसा नहीं कर सकते।
ऐसा करना ही होगा अंकल। देश के लिए और पूरे विश्व के लिए।

आपको हमारी कसम है अंकल, जो आप हमें रोकें।
वाकई तुम दोनों बहुत महान हो मेरे बच्चो। मुझे तुम पर गर्व है।
उफ!

पता कराइये अंकल, इस समय ड्राक्युला कहां है। हम वहीं जायेंगे उसके खून की प्यास बुझाने।
उफ!

दूसरी ओर ड्राक्युला मौत बरसाने जा पहुंचा था एक अन्य शहर में—

जल्दी ही—
खत्म कर डालो इस पूरे शहर को। एक भी आदमी जीवित नहीं बचना चाहिए।

मौत बढ़ रही थी अपने शिकार की ओर—
हा...हा...हा...!
भागो!
भागो!

इस मौत को रोका था राम की तेज आवाज ने –

रुक जा ड्राक्युला! हम तेरा शिकार बनने आ गये हैं!

छोड़ दे उन निर्दोषों को! हम तेरा आहार बनने के लिए तैयार हैं।

आहा! राम-रहीम!

हा... हा... हा...! आखिर तुम्हें आना ही पड़ा। आज तुम्हें खाकर मैं अपनी वर्षों की तमन्ना को पूरी करूंगा! हा... हा... हा...!

मौत का दूत बना ड्राक्युला राम-रहीम की ओर बढ़ा –

हा... हा... हा...!

तभी हो गया एक चमत्कार...
रोशनी का एक बम-सा फटा था वहां पर...

...जिसने कुछ देर के लिए अंधा कर दिया था सभी को

और जब सभी की आंखें देख सकने के काबिल हुईं तो गायब थे—
राम रहीम!

कहां गये दोनों?
कहां थे राम-रहीम?

दूसरे ही क्षण ड्राक्युला की दहाड़ से थर्रा उठा वातावरण—

धोखा! ड्राक्युला से धोखा!
अब कोई मुझसे नहीं बचेगा, कोई नहीं!

साथियो, श्मशान बना दो इस शहर को! मनुष्य विहीन कर डालो धरती को!

आदेश मिलते ही वह शैतान निर्दोषों में मौत बांटने लगे।
हा... हा... हा...! अब फायरा की आग से पूरा ब्रह्माण्ड जलेगा!

नोट:- जेम्बो के बारे में जानने के लिए पढ़े- राम-रहीम का कॉमिक्स विशेषांक • "आकाश का जादूगर"•

...सबकुछ सुनकर...
ओह! कौन था वह शैतान?
ड्राक्युला नाम था उसका। स्वयं को पृथ्वी का वासी बताता था वह।
हमारे ग्रह का एक सुपर सोनिक यान और डैथ स्क्वैयड के चारों शक्तिशाली योद्धाओं को अपना गुलाम बनाकर पृथ्वी की तरफ ही गया है वह।
...सबकुछ सुनकर खून उतर आया था मेरी आंखों में...
मैं ड्राक्युला को जीवित नहीं छोड़ूंगा। पृथ्वी पर जाकर नेस्त-नाबूद कर डालूंगा उसको।
...मैं तुरन्त ही पृथ्वी की ओर रवाना हो गया...
...और जब उसे तलाश करता यहां तक पहुंचा तो तुम दोनों को उसके जाल में फंसा पाया...
उफ! ये तो राम-रहीम हैं। मुझे नया जीवन देने वाले मेरे रक्षक।
मैं इन्हें मौत के मुंह में नहीं जाने दूंगा।
...बिना एक क्षण गंवाये मैंने सुपर लेजर गन का प्रयोग किया...

...और तुम्हें बचाकर यहाँ ले आया।
तुमने हमें बचाकर अच्छा नहीं किया दोस्त, अपनी हार से क्रोधित होकर ड्राक्युला पूरे विश्व में तबाही मचा देगा।
कितने नादान हो तुम। तुम क्या समझते हो, तुम्हें मार देने के बाद वह शांति से बैठ जाता।
नहीं, उसका उद्देश्य पृथ्वी से मनुष्यता का नाश करके पिशाचों की दुनिया बसाना है।
तुम्हारे बलिदान से यह समस्या हल नहीं होने वाली दोस्तो!
ओह!

तो फिर क्या किया जाये? कैसे निपटा जाये उस शैतान से?
उससे निपटने का अब एक ही हल है। अपने देश के सभी जांबाजों को इकट्ठा करो और पूरी शक्ति के साथ उस पर टूट पड़ो...
इस नेक काम में मैं भी तुम्हारे साथ हूं।
जेम्बो भाई ठीक कह रहे हैं राम। हमें ऐसा ही करना चाहिए।
कुछ ही पलों बाद राजनगर मिलिट्री हैडक्वार्टर में मौजूद थे देश के सभी सुपर हीरो
राम-रहीम
क्रुकबाण्ड
तूफान
इन्द्र
हवलदार बहादुर
और भूतनाथ।

समस्या सुनकर सभी एक स्वर में बोले थे—
ड्राक्युला को खत्म करने में अपनी जान की बाजी लगा देंगे हम।
हवालात में बन्द करके सड़ा दूंगा साले ड्राक्युला को!
तुरन्त ही—
बाण्ड भइया! जरा अपनी मोटर को धीरे भगा, वरना मेरा तो कुछ नहीं होगा, पर बेचारी चम्पाकली बेकार में विधवा हो जायेगी।
MANOJCOMICS
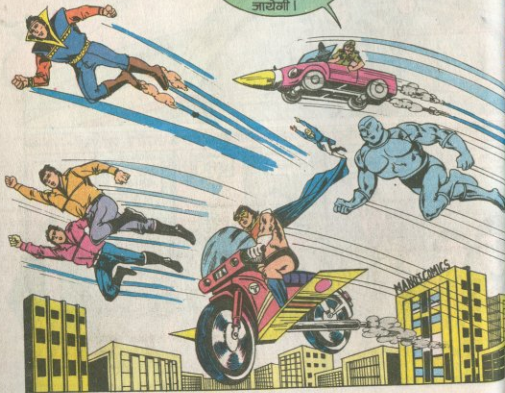
कुछ ही पल बाद वह सब ड्राक्युला के सामने थे—
बस कमीने, बहुत तबाही मचा चुका तू!
तेरी मौत बनकर आया है तूफान!
इन्द्र तेरी मौत का तोहफा लेकर आया है।
साले, तुझे तो मैं हवालात में डालकर ऐसा सड़ा दूंगा कि दो-दो फुट के कीड़े पड़ जायेंगे तेरे शरीर में।
ड्राक्युला को खत्म करने आये हो तुम...लेकिन तुममें से कोई वापस नहीं जा पायेगा, क्योंकि ड्राक्युला बन जायेगा...
...तुम सबकी मौत!
तुरन्त ही आदेश गूंजा ड्राक्युला का—
टूट पड़ो इन सब पर!
फौरन आगे बढ़े फायरा, हथौड़ा, बिल्लौटी और शैतान!

और इधर आगे बढ़े सुपर हीरो –
क्रूकबाण्ड के सामने था फायरा –
प्यारे, होलडोल कर दे इस भइये का कबाड़ा!
ओ.के. मास्टर!

अगले पल सुपर कार से निकलकर आगे बढ़ी घातक मिसाईलें।
शियूं
शियूं

लेकिन फायरा तक नहीं पहुंच सकीं –
बड़ाम

देखता हूं अब फायरा की आग से कैसे बचता है तू!

लेकिन फायरा बाण्ड की सुपर कार की — शक्तियों से परिचित नहीं था –
उफ! फायरा की घातक आग बेकार गई!
इधर फायरा हैरान था –

और उधर –
तुझे चीर फाड़कर खा जाऊंगा मैं!
बिना सोचे-समझे बढ़ रहा था शैतानू तूफान की तरफ

...लेकिन नहीं जानता था कि तूफान नाम का ही नहीं, काम का भी तूफान है—
आई... ई... ई...
अब पिघलकर कंकाल में बदलने में ज्यादा देर नहीं लगेगी तुझे।
नहींsss
...सचमुच पलभर में ही पिघलकर कंकाल बन गया था शैतान—
आई...ई...ई
जबकि हथौड़े को सम्भाल रखा था इन्द्र ने—
बस, बहुत इस्तेमाल कर चुका है तू अपने हथौड़े का।
ला, इसे इधर ला!
खच्च
आssss
और अगले पल—
भच्चाक
ले संभाल अपने हथौड़े को!

जेम्बो भारी पड़ रहा था बिल्लौटी पर –
बहुत अच्छा योद्धा था तू मेरे ग्रह का अफसोस है कि तुझे...
... अपने हाथों से खत्म करना पड़ रहा है मुझे!
भड़ाक
इधर फायरा अब राम-रहीम के बीच घिरा हुआ था –
तेरी इस आग से हमारे स्पेस सूटों पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला!
लेकिन मेरा हाथ जरूर तेरी हवा खराब कर देगा!
रहीम से अलग होकर हाथ तोप से छूटे गोले की तेजी से फायरा से टकराया था –
धाड़
आई
एक पल के लिए हड़बड़ाया फायरा और उसी पल ...
!!!
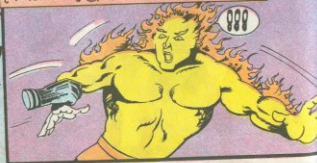
...फिर चक्करघिन्नी बना डाला उसे रहीम के हाथ ने—
आई... ई... ई...
अब तेरी सारी आग को ठन्डा करके ही मानेगा मेरा हाथ!
और जब रहीम के हाथ ने उसे छोड़ा तो—
अन्तरिक्ष की सैर करने जा चुका था वह—
हैरान रह गया था ड्राक्युला अपने साथियों का अंजाम देखकर—
उफ! सभी खत्म हो गये!
तभी-
धड़ाक
ओह!
अभी तो तुझे भी खत्म होना है, ड्राक्युला!
तेरे साथियों की तरह अब तेरा भी अन्त आया समझ कमीने!
भूतनाथ के बारे में जानने के लिये पढ़े- "फिर आया ड्राक्युला"
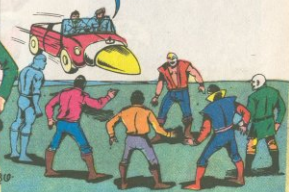
उनकी बात सुन ड्राक्युला ठहाके लगा उठा –
हा... हा...हा..! तुम सब मारोगे मुझे! आओ, बढ़ो आगे! कोशिश करो!
जेम्बो आगे बढ़ा –
मैं तुझे अपने हाथों से खत्म करूंगा!
लेकिन ड्राक्युला तक पहुंचने से पहले ही उसके हलक से चीख उबल पड़ी –
आ... ई...ई..
इस शक्तिशाली वार को झेल न सका जेम्बो।
...और उसे नीचे गिरता देख –
बाण्ड, सम्भालो उसे।
ओ के बड़े भाई!
बाण्ड के आदेश पर सुपर कार ने खाया एक तेज गोता और –
धप्प

इधर ड्राक्युला से टकराने उसके सामने जा खड़े हुए प्रोफेसर भूतनाथ, राम-रहीम, इन्द्र और तूफान—
कितनी भी कोशिश कर ले, आज तू हमारे हाथ से बच नहीं सकता!
पहली कोशिश की तूफान ने...
...ड्राक्युला को रौंदने के लिए...
... बेहद तेज गति से लहराई उसकी बाईक ...
... लेकिन —
ड्राक्युला को कुचलना इतना आसान नहीं है मच्छर!
ओह!
उफ्!
ओह!
दूर उछाल दिया तूफान और उसकी बाईक को ड्राक्युला ने—

तूफान का हाल देख सब एक साथ ड्राक्युला की तरफ झपटे-
इन सबसे पार पाना मुश्किल है। अगर मुठभेड़ में मणि मेरे हाथ से निकल गई तो मैं मारा जाऊंगा। अतः फिलहाल यहां से भाग जाना चाहिए!
अगले पल ड्राक्युला के हाथों से हवा का बवंडर सा निकला...
...जिसमें पलभर के लिए फंसकर रह गये सभी—
उफ्!
ओह!
ओ नो!
और इसी पल का भरपूर फायदा उठाया ड्राक्युला ने...
...भागने के लिए-
जा रहा हूं, लेकिन जब तक तुम सब से इन्तकाम नहीं लूंगा, चैन से नहीं बैठूंगा।

उफ! भाग गया!
अच्छा हुआ भाग गया साला, वरना...
तुम उसे हवालात में डालकर सड़ा देते, क्यों?
हे..हे..हे.. मेरे साथ रह कर तू काफी समझदार-होता जा रिया है भइये।
सचमुच बेहद खतरनाक है इस बार ड्राक्युला!
लेकिन उसके भागने से एक बात साफ हो जाती है कि ड्राक्युला को खत्म करना इतना मुश्किल नहीं, जितना हम समझ रहे थे।
और मेरी समझ में यह भी आ गया है कि ड्राक्युला भागा क्यों?
तो जल्दी बताओ, क्यों भागा वह?
क्योंकि उसे डर था कि अगर लड़ाई के दौरान उसकी मणि उससे दूर हो गई तो वह मारा जायेगा।

माई गॉड। यह बात तो हमारे दिमाग में आई ही नहीं, अगर वह मणि उसके पास न रहे तो हम उसे खत्म कर सकते हैं।
और ठीक यही बात ड्राक्युला भी सोच रहा था —
उन सभी शक्तियों से एक साथ टकराना मूर्खता होगी। उन सबको अलग - अलग करके अपने वश में करना होगा।
मगर कैसे?
अचानक उछल पड़ा ड्राक्युला —
हां, यही ठीक रहेगा। प्रेत जाल फैलाना होगा मुझे। ऐसा प्रेत जाल, जो, कहलायेगा...
...ड्राक्युला का प्रेत जाल हा... हा... हा...!
दूसरी ओर —
वह चुप नहीं बैठेगा, जरूर कोई अगली वारदात करने की सोच रहा होगा वह...
... अत: ड्राक्युला के हर जाल से सतर्क रहना है हमें।

आप लोग बैठिए, मैं ज़रा अपने घर होकर आता हूं।
ठीक है।
FENZZ

तूफान चल दिया अपने घर की तरफ —

लेकिन अभी वह कुछ ही दूर चला था कि —
बचाओ!!!
बचाओ!!!
ओह! लगता है कोई संकट में है!

अगले पल उसने बाईक आवाज़ की दिशा में मोड़ दी —
बचाओ!!!
बचाना चाहिए उसे।

वे रहे।
बचाओ!!!

अगले ही क्षण तूफान का शरीर हवा में लहराया ...

...लेकिन जैसे ही वह बदमाशों से टकराया।

ओह! धोखा!

उफ! निकल ही नहीं पा रहा हूं मैं इनकी पकड़ से!

हा...हा...हा...!

हा...हा...हा!

तड़फड़ा उठा अपनी टांगें छुड़ाने के लिए वह...

...लेकिन मौका नहीं मिल पाया उसे—

हा...हा...हा...!

अपनी एड़ियों पर फिरकनी की भांति घूमा वह...
उफ! पीछे भी खतरा!
पीछे और आगे के खतरे के चक्कर में ऊपर के खतरे को नहीं देख पाया था रहीम—
और जब तक उसे पता चलता...
... बहुत देर हो चुकी थी-
उफ!
पलभर लगा उसे बेहोश होने में ...
... जबकि उतना भी समय न लगा प्रेतों को उसे लेकर गायब होने में।

अन्दर –
बाण्ड, जरा अपनी कार लेकर मेरे साथ पुलिस हैडक्वार्टर तक चलोगे।
हां-हां, क्यों नहीं। आओ।
इधर बाण्ड और राम बाहर निकले ...

...उधर वहां खतरे ने अंदर प्रवेश किया –
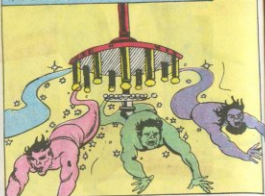
और किसी को मौका मिलने से पहले ही –
उफ!
अरे!
अरे!
आंय!

फिर कुछ समझने से पहले ही वह ...

... लोग बेहोश हो चुके थे –

और फिर दूसरे ही पल –

ड्राक्युला ठहाके लगा उठा था, सभी को अपने कदमों में देखकर-
हा... हा... हा...! सभी आ पहुंचे हैं। अब बचे हैं राम और क्रुकबाण्ड। उन्हें भी मेरे प्रेत लेकर पहुंचते ही होंगे।
उधर पुलिस हैडक्वार्टर की ओर बढ़ते राम और क्रुकबाण्ड...
...अचानक चौंक पड़े -
वह सामने सड़क पर क्या हो रहा है राम भाई?
कुछ गड़बड़ लगती है। कार यहीं रोक लो।
उफ! मुझे तो ये कोई पैशाचिक चक्कर लग रहा है।
ठीक है।
अपने होलडोल को इस स्थिति से निपटने के लिए बोलो।

तुरन्त ही—
मि. होलडोल, निपटो इनसे।
यस मास्टर!
अगले ही क्षण—
बूम्म
बूम्म
भड़ाम
भड़ाम
आऽऽऽ
आऽऽऽ
जैसे ही वे दोनों पिशाच खत्म हुए—
ओह! ये तो और आ रहे हैं बाण्ड!
चिन्ता मत करो बड़े भाई, अभी इन सबसे भी निपट लेते हैं।
मिस्टर होलडोल, पहले हमें कवर करो। फिर इन सबको मजा चखाओ।
यस मास्टर!
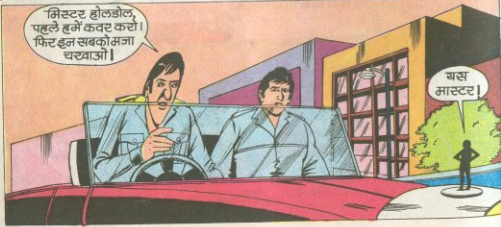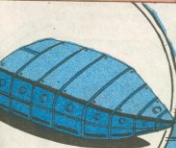
गले पल दो काम हुए एक साथ —
दिशुम
धाड़
धाड़
पर कार से निकले लम्बे-लम्बे हाथ-पैर बड़तोड़ बरस रहे थे प्रेतों पर —
धाड़ धाड़ धाड़
और फिर उस समय तक बरसते रहे...
तक कि बाण्ड ने नया आदेश न दे दिया डोल को —
बस भइये डोलडोल, बहुत आ। अब हमें हवा की सैर कराओ।
ओ.के. मास्टर।
तुरन्त ही सुपर कार उड़ने लगी हवा में —
कहां जा रहे हैं हम बाण्ड?
किसी ऐसी जगह, जहां हमारी जान को खतरा न हो।

उधर अपनी हार को देखकर तिलमिला उठा था ड्राक्युला —
मेरे प्रेत जाल को तोड़कर चले गये वे। लेकिन उन्हें मेरे जाल में आना ही होगा।
ऐसी चाल चलूंगा अब कि सिर के बल चलकर आएंगे दोनों मुझ तक।
अगले दिन तहलका मच गया पूरे भारत में-
नहीं ऐसा नहीं हो सकता।
ऐसा ही हो रहा है मेरे भाई। ड्राक्युला ने सारे सुपर हीरोज को राजनगर चौराहे पर बांध रखा है...
और चेतावनी दी है कि अगर राम और क्रुकबाण्ड वहां नहीं पहुंचे तो वह सबको मौत के घाट उतार देगा।
तुम्हें विश्वास नहीं तो थोड़ी देर बाद ट्रांजिस्टर पर सुन लेना। ड्राक्युला फिर घोषणा करने वाला है।
ओह!
अभी वह बोलकर चुप ही हुआ था कि...
... ट्रांजिस्टर पर मैसेज उभरने लगा —
राम, अगर तुम सुन रहे हो तो सुनो। मैं ड्राक्युला बोल रहा हूं। अगर तुम अपने साथियों की जान बचाना चाहते हो तो दस मिनट के अंदर-अंदर राजनगर चौराहे पर पहुंच जाओ ...

...भयंकर मुसीबत में फंस गये हैं वे सब।

अचानक –

कभी मुसीबत में फंसो तो हमें याद कर लेना भइया, तुम्हारी बहन तुम्हारी सहायता के लिए अवश्य उपस्थित होगी।

!!!

अगले पल –

इस मुसीबत में मुझे अपना एक मददगार याद आया है बाण्ड।

ठीक तुम्हारी तरह मुझे भी अपना एक मददगार याद आ गया है।

अपने मददगारों के बल पर हम ड्राक्युला से लोहा ले सकते हैं बाण्ड!
तुम ठीक कह रहे हो राम भइया, अब ड्राक्युला की खैर नहीं।
कौन थे राम और बाण्ड के मददगार?
इधर राजनगर के मुख्य चौराहे पर –
बस दो मिनट बाकी हैं। अगर इस बीच राम और कुक-बाण्ड यहां नहीं आये तो तुम सब के शरीरों के परखच्चे उड़ा डालूंगा मैं।
उफ! सिर्फ दो मिनट!
अब हम सबकी मौत निश्चित है।
समय जैसे पंख लगाकर उड़ रहा था –

ठीक दो मिनट बाद –
बस, पूरे हुए दो मिनट और साथ ही तुम्हारी जिन्दगी का समय भी।
अगले पल ड्राक्युला की आंखों से निकलकर घातक किरणें आगे बढ़ीं...
.. लेकिन किसी के भी शरीर से टकराने से पहले ही –
कड़ाक
और ड्राक्युला के सम्भलने से पहले ही उसके शरीर से आ लिपटे सैकड़ों नाग –

हमारे होते तू किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता दुष्ट!
!!
??
!!
कौन हो तुम ?
किसी का भी अहित करने से पहले तेरे शरीर में विषाग्नि भर दूंगा मैं!
त्रिकालदेव कहते हैं मुझे! तुझे समाप्त करने के लिये कई सदियों का फासला तय करके आया हूं मैं!
• त्रिकालदेव के इस सदी में आने के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें त्रिकालदेव और काली खोपड़ी।
और मैं हूं इच्छाधारी नाग! सर्पलोक से तेरा संहार करने उपस्थित हुआ हूं मैं!
• सर्पराज के बारे में जानने के लिए पढ़ें हाहाकारी कॉमिक्स 'इच्छाधारी राम'•
और इनको लाने वाले हैं हम। मैंने इस रुद्राक्ष के बल पर - बुलवाया है त्रिकाल-देव को!
और सर्पराज को मैंने अपनी मानसिक शक्तियों के बल पर बुलाया है...
...सिर्फ तेरा विनाश करने के लिए!

भूल है यह तुम्हारी। मेरा विनाश कोई भी शक्ति नहीं कर सकती।
किसी भी शक्ति का मेरे सामने कोई महत्व नहीं है।
उफ!
एक हल्के से झटके से ही नागों की जकड़ से आज़ाद हो गया ड्राक्युला ...
...और—
अब इन सबकी तरह तुम्हें भी कैद करेंगे मेरे प्रेत।
ओह!
त्रिकालदेव, सम्भलो!
चिन्ता मत करो राम, हम निपट लेंगे इनसे।
दिव्यास्त्र के सामने अधिक देर तक नहीं टिक पायेंगे ये।
दूसरे ही क्षण—
नगाषू ही प्रलय बनेगा इनके लिए।
नगाषू ने फौरन लपेट लिया कई प्रेतों को-
ई... ई... ई...
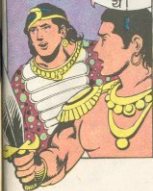
अगले पल सर्पराज भी आग उगलने लगा –

आई... ई... ई...

आऽऽऽ

इधर त्रिकालदेव का दिव्यास्त्र मौत उगल रहा था।

खच्चाक

खच्चाक

तीनों के कहर से यमपुरी पहुंचते जारहे थे प्रेत –

आई... ई... ई...

आऽऽऽ

ई... ई... ई...

हाय!

आह!

ड्राक्युला चकित था यह सब देखकर –
सचमुच अद्भुत शक्तियां हैं ये दोनों। इनसे निपटना आसान नहीं।
इन्हें रोकने के लिए इन दोनों को भी कब्जे में लेना होगा।
फौरन राम और क्रुकबाण्ड की तरफ बढ़ा ड्राक्युला –
मेरी हार के जिम्मेदारों अब तुम्हारी मौत आ गई है।
लेकिन आगे बढ़ते ड्राक्युला के कदम अचानक रुक गये ...
... आंखें आतंक से फटी की फटी रह गईं ...
... इस दृश्य को देखकर –
राम का खून पीना इतना आसान नहीं है ड्राक्युला, क्योंकि अब राम साधारण राम नहीं, बल्कि इच्छाधारी नागिन की शक्तियों को लेकर बन चुका है...

...इच्छाधारी राम।
उफ!
अब राम तेरी चटनी बनाकर ही छोड़ेगा।
अभी आश्चर्य के सागर में गोते लगा ही रहा था ड्राक्युला कि नाग बने राम का शरीर हवा में लहराया...
...और जा लिपटा ड्राक्युला के गले से –
अब तेरी मौत बन जाऊंगा मैं ड्राक्युला।
अगले पल उसने मणि का तेज प्रहार राम के शरीर पर कर दिया –
आ!!!
कसाव बढ़ने लगा राम का और दम घुटने लगा ड्राक्युला का –
उफ! सांस घुट रही है मेरी!
दम निकल जायेगा मेरा, अगर जल्दी ही मणि का प्रयोग नहीं किया तो!
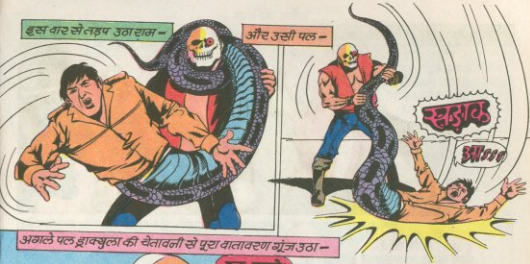
इस वार से तड़प उठा राम –
और उसी पल –
खड़ाक
आऽऽऽ
अगले पल ड्राक्युला की चेतावनी से पूरा वातावरण गूंज उठा –
रुक जाओ!
तुम में से अब किसी ने भी मेरे प्रेतों पर वार किया तो सबको मार डालूंगा मैं!
उफ!
ओह!
!!!

• बेबस और मजबूर हो गये थे कुकबाण्ड व त्रिकालदेव भी ड्राक्युला की बात मान लेने के लिए ...

सबके प्राण बचाने के लिए मुझे किसी तरह उस मणि को इससे अलग करना होगा!
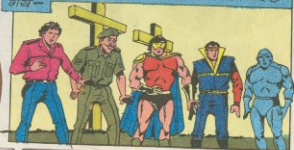
हा... हा... हा...
और ऐसे ही वह ड्राक्युला के नजदीक पहुंचा —
खचाक
आ ऽऽऽ
धप्प
मणि ड्राक्युला से जुदा होते ही सारे के सारे आजाद हो गये —
अगले पल मौत तेजी से ड्राक्युला की ओर बढ़ी —
मरने के लिए तैयार हो जा ड्राक्युला!
नहीं...! यह नहीं हो सकता!
ड्राक्युला को कोई नहीं मार सकता, कोई नहीं!
गड़ गड़
और किसी के कुछ समझने से पहले ही...
... पृथ्वी के गर्भ में समाता चला गया वह —
आ ऽऽऽ
आ ऽऽऽ

उसके धरती में समाते ही–
यह दृश्य देख सब हतप्रभ रह गए थे–
उफ! बड़ी भयंकर चाल चल गया दुष्ट!
वाकई, पाताल में समाकर जान बचाली उसने अपनी।
खैर, जो भी हुआ, ठीक हुआ! फिलहाल तो तुम लोगों को ड्राक्युला से मुक्ति मिली!
मुझे लगता है, हमें ड्राक्युला से कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। न जाने कमबख्त कितनी बार मर कर जीवित हो चुका है।
चिंता मत करो मित्र, अब वह दुबारा हमारे सामने आयेगा तो जीवित नहीं बचेगा।
वैसे अच्छा ही किया उस साले ने भागकर, वरना हवालात में डालकर सड़ा दिया होता मैंने उसे!
हवलदार बहादुर की बात सुनकर सभी ठहाका लगा उठे–
हा हा हा! हा हा हा! हा हा हा!

फिर-
हमारा काम खत्म हुआ दोस्तो, अब हमें अपने लोक वापस जाना होगा।
हम आप लोगों के आभारी हैं, अगर आप लोग न होते तो ड्राक्युला ने हमें खत्म कर दिया होता।
इसमें आभारी होने की कोई बात नहीं मित्र! मानवता के पुजारियों को बचाने के लिए अगर त्रिकाल देव के प्राण भी चले जाते तो दुख नहीं होता!
अब हमें आज्ञा दीजिये!
FENZZ
और मुझे भी!
फिर ज़ेम्बो, इच्छाधारी नाग-नागिन और त्रिकालदेव अपने-अपने लोक वापस चल दिये -
ड्राक्युला के साथ-साथ महाशक्तियों के इस अद्भुत संगम को हम कभी नहीं भुला सकेंगे।
समाप्त